वृत्तपत्राचे नांव :– नवभारत
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– मुंबई
वृत्तपत्र पान क :– 10
दिनांक :–11/10/2010

सेवा का बल तपस्या के बल से ज्यादा महत्वपूर्ण

स्वामी चक्रपाणि ॥

आज अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस है। यजुर्वेद में ऋषि कहते हैं, हे जिज्ञासु पुत्र! तू माता की आज्ञा का पालन कर। तू मां को अपने दुराचरण से शोक संतप्त मत कर। मां को सदा अपने निकट रख और उसके सामीप्य में रहकर शुद्ध मन और शुद्ध आचरण की ज्योति से प्रकाशित हो।

नई पीढ़ी वृद्ध लोगों की सेवा का अर्थ भूल गई है। माता-पिता ओल्ड एज होम में जाने लगे हैं। बच्चों का अपना अलग जीवन है। वृद्ध एकांगी जीवन जीने को विवश हैं। जो अपने माता-पिता की ही सेवा नहीं कर पाते, समाज की सेवा क्या करेंगे।

वेदों में कहा है कि तेरे माता-पिता ही तेरे देवता हैं, सबसे पहले तू अपने देवता को प्रसन्न कर। कोई भी व्यक्ति अचानक भीतर से प्रसन्नता का अनुभव नहीं करता। आंतरिक खुशी का संबंध सुख-सुविधा के भौतिक साधनों से नहीं होता। साधनों से प्राप्त सुख बाहरी होता है और क्षणिक होता है। लेकिन श्रद्धा और अपनत्व से आंतरिक खुशी और संतोष प्राप्त होता है। माता-पिता या वृद्ध जनों को भव्य भवन या मूल्यवान संसाधनों कीआवश्यकता नहीं होती, वे अपनत्व पा कर ही खुश हो जाते हैं।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता के चरणों में स्वर्ग होने की बात कही गई है। महाभारत में बताया गया है कि जैसे भूमि के समान कोई दान नहीं, सत्य के समान कोई धर्म नहीं, दान के समान कोई पुण्य नहीं, वैसे ही माता के समान कोई गुरु नहीं।

महाभारत में भीष्म कहते हैं कि आचार्यों से दसगुना बढ़कर उपाध्याय का, उपाध्यायों से दसगुना बढ़कर पिता का और पिता से दसगुना बढ़कर माता का गौरव होता है। माता के ऋण से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता।

पुराणों में एक कथा है। एक बार वशिष्ठ जी ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में गए। उन्होंने बड़ा सत्कार किया। कुछ दिनों बाद जब वशिष्ठ चलने लगे तो विश्वामित्र ने अपनी तपस्या का एक हजार वर्ष उन्हें उपहार में दे दिया। संयोग से कुछ समय बाद विश्वामित्र का भी जाना हुआ वशिष्ठ के आश्रम में। उन्होंने भी विश्वामित्र को खूब आदर-सत्कार के साथ रखा। जब वे विदा होने लगे तो वशिष्ठ ने उपहार स्वरूप उन्हें एक दिन का अपना सेवा बल भेंट किया।

इस बात से विश्वामित्र दुखी हुए, क्योंकि उन्होंने तो एक हजार वर्षों का तप भेंट किया था। वशिष्ठ ने विश्वामित्र के मन की बात समझ ली। वे विश्वामित्र को ले कर कैलाश पर्वत पर शिव के पास पहुंचे और अपनी समस्या रखी। शिव बोले कि इस समय मैंने गंगा को अपने सिर पर धारण कर रखा है। यदि आप में से कोई इसे थोड़ी देर के लिए अपने सिर पर धारण कर ले, तो मैं इसका उत्तर दे सकता हूं।

पहले विश्वामित्र आगे आए और कहा कि मैं अपने तप बल से गंगा को धारण कर सकता हूं। शिव ने कहा ठीक है। विश्वामित्र साधना की स्थिति में बैठ गए। गंगा शिव की जटाओं से निकल कर विश्वामित्र के सिर पर आने लगी। लेकिन वे तो गंगा की पहली धारा के प्रवाह में ही बह गए।

शिव ने गंगा को पुन: अपनी जटाओं में ले लिया और विश्वामित्र को योग शक्ति से धारा से बाहर निकाला। अब बारी थी वशिष्ठ की। वे भी साधना की मुद्रा में बैठ गए और कहा, यदि मैंने एक दिन भी परहित किया हो, वृद्धों की सेवा की हो, तो हे गंगा, मेरे सिर पर विराजो। गंगा की धारा शिव की जटाओं से निकल कर वशिष्ठ के सिर में बहने लगी। वशिष्ठ के पास सेवा का बल था।

जो व्यक्ति वृद्ध लोगों और जरूरतमंदों की सेवा करता है, उसका सेवा बल हजार वर्षों की तपस्या से भी बड़ा होता है।